# जीवन यात्री

तंबान मेलत,
द्वितीय वर्ष बि. एससी (गणित)

यात्री हूँ मैं,
इस जीवन पथ के
छत्री के, आकाश के
नीचे मैं घूमता ।

रात्री के सन्नाटे में भी
रुकता तो नहीं
साथी के बिना मैं
अकेले ही चलता ।

चलता हूँ मैं,
बिना आराम के
कल की शुभकामनायें
छिपाये ही मन में ।

पथ तो भरा है
काँटों और पथरों से,
फूल भी होंगे पडे - पडे
कौन जाने कहाँ - कहाँ ।

कैसे मैं मुक्त बनूँ
इस अकेलेपन से ?
पीता ही जाता है
दुःखों का ही घूँट :

हर रोज मैं करता
प्रतीक्षा तो अनेक,
गिरता मैं अगले दम
विषाद के गर्त में ।

उमडता है खून
मेरे चेहरे से, तन से
रोता हूँ मैं दर्द से
पर सुनता है कौन !!